

## प्याज की खेती के लिए उपयोगी बिंदु

सुबेदार सिंह<sup>1\*</sup>, दुर्गेश कुमार मौर्य<sup>2</sup>, ज्ञानेंद्र सिंह<sup>1</sup> और अंकित सिंह चौहान<sup>3</sup>

<sup>1</sup>सहायक प्राध्यापक, मदरहुड विश्वविद्यालय, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखंड

विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), कृषि विज्ञान केंद्र, संत कबीर नगर

ब्लॉक मिशन प्रबंधक, आजीविका मेरठ, उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन

\*E-mail: subedarsingh4587@gmail.com

सब्जियों और मसलों दोनों रूप में प्याज एक महत्वपूर्ण फसल है, इसमें कुछ मात्रा में प्रोटीन और विटामिन पाई जाती है, इसके अलावा प्याज में औषधीय गुणों की एक विस्तृत श्रृंखला भी पाई जाती है, जो मानव स्वास्थ्य से संबंधित अत्यंत लाभकारी है, इसका उपयोग हम सलाद, अचार और सूप आदि बनाने में किया जाता है, प्याज की खेती भारत के विभिन्न राज्यों में की जाती है, जिसमें महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडु मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और बिहार आदि राज्य शामिल हैं, भारत में प्याज का सबसे अधिक उत्पादन मध्य प्रदेश राज्य में किया जाता है।

### मिट्टी और जलवायु

प्याज की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है, यदि रेतीली और उपजाऊ मिट्टी है, तो वह भी सर्वोत्तम मानी जाती है। मिट्टी का पी एच मान 6.5 से 7.5 के मध्य होना चाहिए। मिट्टी में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम, सल्फर और सूक्ष्म पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा होनी चाहिए। मिट्टी अच्छी जल निकास वाली होनी चाहिए। और मिट्टी ढीली होनी चाहिए। जलवायु हल्की ठंडी से लेकर गर्मी तक की होनी चाहिए, लेकिन

अत्यधिक ठंड और अधिक नमी से बचना चाहिए।

### बीज दर एवं उपचार

एक एकड़ खेत के लिए तीन से चार किलोग्राम बीज की आवश्यकता पड़ती है। बुवाई से पूर्व बीजों को बाविस्टिन से उपचारित करना चाहिए। इसके लिए दो ग्राम बाविस्टिन को एक लीटर पानी में मिलाकर घोल तैयार करें फिर उसके बाद इस तैयार मिश्रण से प्याज के एक किलोग्राम बीज को उपचारित करना चाहिए। नर्सरी नर्सरी बेड तैयार करने के लिए ध्यान रखना चाहिए, कि एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 वर्ग मीटर का नर्सरी बेड होना चाहिए, इसकी आखिरी जुताई के दौरान उसमें लगभग 200 किलोग्राम सड़े हुए गोबर की खाद को 2 लीटर ट्राइकोडर्मा हरजेनियम के साथ मिलकर खेत में प्रयोग करना चाहिए, इसका प्रयोग करने से प्याज के पौधों में डंपिंग ऑफ, जड़ सड़न, कॉलर सड़न और अन्य मृदा जनित रोगों को नियंत्रित करने में सहायता मिलती करता है। बेड तैयार करते समय 1-1.2 मीटर चौड़ी और 10 से 15 सेंटीमीटर ऊंची और सुविधाजनक ऊंचे बेड तैयार करना चाहिए, क्यारी के बीच 70 से 75 सेंटीमीटर की दूरी भी बनाए रखना चाहिए।



## बुवाई का समय

प्याज की बुवाई दो मुख्य मौसमों में होती है:- रबी (अक्टूबर से दिसंबर) और खरीफ (जून से जुलाई)। रबी में उगाई जाने वाली प्याज अधिक उपज देती है।

## बीज और रोपाई

प्याज का बीज तीन से चार किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बोया जाता है। प्याज का बीज या बल्ब (सेट) उपयोग किया जाता है। बल्ब से अधिक तेजी से उगते हैं। बीज का चयन अच्छे गुणवत्ता वाले और रोगमुक्त बीज होने चाहिए।

खरीफ मौसम के लिए 6 से 7 सप्ताह और रबी मौसम के लिए 8 से 9 सप्ताह के भीतर नर्सरी में उगाए गए पौधे रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं, रोपाई करते समय लाइन से लाइन की दूरी 15 सेंटीमीटर और पौधों के बीच 10 सेंटीमीटर की दूरी रखनी चाहिए।

## सिंचाई

प्याज की खेती में उचित सिंचाई बहुत महत्वपूर्ण है। बीज बोने के बाद हल्की सिंचाई की जाती है, और बाद में जरूरत के अनुसार सिंचाई करनी चाहिए। अत्यधिक पानी से जड़ सड़ने का खतरा होता है।

## खाद और उर्वरक

प्याज की फसल के लिए अच्छी गुणवत्ता की खाद और उर्वरक का उपयोग किया जाता है। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैश का संतुलित (60:24:24 किलोग्राम) प्रति एकड़ की दर का प्रयोग करने से अच्छी पैदावार मिलती है।

## खरपतवार नियंत्रण

प्याज के खेत में खरपतवार की समस्या हो सकती है, इसलिए नियमित रूप से खरपतवार की सफाई और जड़ से निकालना जरूरी है। खरपतवार नियंत्रण करने के लिए रोपाई के लगभग 45 दिन के बाद ऑक्सीफ्लोरफेंस 23.5% EC 200



मिलीलीटर प्रति एकड़ की दर से डालना चाहिए। इसके बाद हाथ से निराई करें।

## रोग और कीटों से बचाव

प्याज में विभिन्न कीट और रोगों का प्रकोप हो सकता है, जैसे की प्याज का तना मच्छर, सफेद मक्खी, और फफूंदी। इनसे बचने के लिए कीटनाशक और फफूंदी नाशक का उपयोग किया जाता है।

## कटाई और भंडारण

प्याज को तब काटना चाहिए जब उसकी बाहरी परत सूखकर कठोर हो जाए। कटाई के बाद प्याज को अच्छे से सुखाकर ठंडे और सूखे स्थान पर भंडारण करना चाहिए।

उपरोक्त दिए हुए बिंदुओं का यदि अच्छे से पालन किया जाए तो निश्चित ही प्याज की अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।

